वन्दे श्रीचक्रधरं विभुम्

तीनों –पूजावसर

(सर्वज्ञ श्री चक्रधर स्वामी के)



लेखक तथा प्रकाशक

महंत दत्तराज बालमुकुन्द शास्त्री एम. ए.
साहित्य वारिधि

मुकुन्द प्रकाशन, श्रीकृष्ण मन्दिर, थापरनगर, मेरठ (उ.प्र.)
महानुभाव आश्रम, श्रीरामपूर, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

मूल्य ५.०० रूपये

समर्पण

ब्रह्मविद्या शास्त्र के निष्णात पंडित धुरंधर प्रवक्ता, लेखक, समालोचक कै.प.पू.प.म. श्री तलेगांवकर बाबा तपस्वीन्द्र शास्त्री (दिल्ली) जी को सादर समर्पण।

लेखक

श्री चक्रधराय नमः

तीनों पूजावसर

(सर्वज्ञ श्री चक्रधर स्वामी के)

प्रातःकालीन पूजावसर प्रारम्भ

स्वामी श्री चक्रधर जी की प्रतिदिन की दिनचर्याओं की लीलाओं के महत्व को भिन्न २ विद्वानों ने अपने अपने मत से प्रतिपादित किया है। किन्तु भाई देव व्यास ने सभी प्रकार के विशेषत्व के सम्बन्ध में डोमेग्राम को ही प्रधानता दी है।

डोमेग्राम में तीन मन्दिर विद्यमान हैं, जिनमें एक का मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर तो दूसरे का उत्तर दिशा की ओर तथा तीसरे मन्दिर का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा की ओर था। सर्वज्ञ श्री चक्रधर जी दक्षिण दिशा वाले राजमठ में निवास किया करते थे। उस मन्दिर में प्रवेश करते ही पश्चिम दिशा की दीवार के साथ बनाया गया उत्तर दिशा से ले दक्षिण दिशा तक विशाल चबूतरा है, जिस पर स्वामी श्री चक्रधर निद्रा किया करते थे।

रात स्वामी के निद्रा के समय नागुबाईसा स्वामी की खडाऊं कहीं कोई इधर-उधर न कर दे इसलिए कपडे में लिपेट रख देती और स्वयं सर्वज्ञ के श्री चरणों की ओर सिर कर सोया करती। स्वामी के प्रातःकाल उठने पर वे चबूतरे के नीचे पाँव लटकाकर बैठ जाते। स्वामी के थोडा सा

खांसने पर नागुबाई जाग जातीं और सम्मुख आ उनके श्री चरणों पर नमस्कार करतीं। उनके दोनों श्री चरणों में खडाऊं पहनाती। स्वयं आगे बढ द्वार की सांकल खोलती। वहां पास ही दहलीज पर सिर रख नागदेव सोये होते। ठंड के दिनों के चार मास वे मंदिर में ही सोया करते थे। गर्मी तथा बरसात के दिनों में वे दहलीज पर सिर रखकर ही सोते थे।

स्वामी श्री चक्रधर द्वार की चौखटों को दोनों हाथों से पकड अपना एक पांव सोये पडे नागदेवाचार्य की छाती पर रखते। नागदेव यदि गहरी नींद में होते तो स्वामी अपने चरण के अंगूठे से उनके वक्षस्थल को दबाते जिससे उनकी नींद खुल जाती। अपने दोनों ही हाथों से वे स्वामी का श्री चरण पकड हृदय से लगाते, नमस्कार करते, बार २ चूमते। ऐसी प्रक्रिया करतें उन्हें जो आनंदानुभव होता उसे वे ही जानते थे, दूसरा कोई नहीं जान पाता था। उससे प्राप्त सुख के कारण नागदेव उसे छोडना ही नहीं चाहते थे किन्तु बडी देर तक स्वामी एक पांव पर खडे हैं या स्वामी को शौच जाने के लिए देरी हो रही है जान वे छोड देते। कभी २ तो नागुबाईसा को ही कहना पडता अरे नागदेव! स्वामी का श्री चरण छोड दे उन्हें शौच जाने के लिए देरी हो रही है। तब नागदेव श्री चरण छोड देते।

मन्दिर के पिछवाडे दक्षिण पश्चिम दिशा में स्वामी के शौच का स्थान था। स्वामी के साथ नागदेव वहां जाते। जल का लोटा रख वे दूर खडे हो जाते दक्षिण की ओर मुख

तथा उत्तर की ओर पीठ करके स्वामी शौच करते। शौच के पश्चात् नागदेव लोटा उठा लेते और मठ की ओर चल देते। इधर नागुबाई दीपक जलाती मन्दिर झाडबुहार कर साफ करती। शयनार्थ बिछे बिस्तर के कपडे उठा उनका बैठने के लिए आसन रचती। गर्म जल का पात्र तथा साफ धुली हुई धोती ले उनकी प्रतीक्षा करती।

स्वामी के शौच से लौटने पर नागदेव सामने होकर नागुबाई के हाथ से दोनों वस्तुयें लेते। स्वामी को प्रदान करते किसी दिन नागदेव सोये पडे रहते तो नागुबाई ही दोनों वस्तुयें स्वामी को देतीं। स्वामी गर्म जल का पात्र ले स्नानादि क्रिया कर धुली हुई धोती पहन मन्दिर में प्रवेश करते। बिछे आसन पर विराजमान होने पर नागुबाई स्वामी के गीले श्री चरण दुपट्टे से पोंछकर आसन पर रखतीं। किसी दिन नागदेव साथ न जाते तो नींद से हडबडा कर उठ खडे होते। स्वामी को न देख उसी ओर जाने प्रवृत्ती हो जाते जहाँ स्वामी प्रतिदिन जाया करते थे। जाते हुए नागुबाई से पूछते माता! क्या स्वामी सभी प्रात:कालीन क्रिया कर भीतर प्रवेश कर चुके हैं? उत्तर में नागुबाई कहती– अरे नागदेव! इतनी देर तक भला कैसे तुझे स्वामी का विस्मरण हो गया था? नागदेव उधर दौड पडते तो स्वामी कहते – बाई! बुला लो उसे। अभी रात बाकी है अंधेरा छाया हुआ है। ऐसे अंधेरे में बेचारा नागदेव कहां हमें ढूंढ पायेगा? स्वामी की आवाज सुन नागदेव स्वयं ही लौट पडते या नागुबाई पुकारती – अरे नागदेव! यहीं आ

जाओ। सर्वज्ञ यहां पधार चुके हैं। कभी २ स्वामी स्वयं ही पुकारते अरे नागदेव ! यहाँ आ जाओ हम यहीं बैठे हुए हैं। लौटकर नागदेव स्वामी के श्री चरणों पर प्रणाम कर पास बैठ जाते। तभी सभी उपस्थित दर्शनार्थ आये भक्तजनों को अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप स्वामी उपदेश करने प्रवृत्त हो जाते या अधिक रात बाकी होने पर सो जाते या वहीं निश्चल हो बैठे रहते।

कभीकभार स्वामी को निश्चल बैठा देख नागुबाई पूछती प्रभो ! हमे तो प्रात:काल बैठकर आपका चिन्तन स्मरण किया करते हैं किन्तु भगवन् ! आप निश्चल बैठकर क्या करते हैं ?- उत्तर में स्वामी कहते - बाई ! श्री गोविंद प्रभु सर्वज्ञ द्वारा हमें प्रेम भरी लगाई गई चपत का हम बैठे-बैठे चिन्तन करते हैं या सभी जीवोंका चिंतन करते हैं कि कोई हम से क्या चाहता है ?

प्रात:काल मुख प्रक्षालन के समय पहले दिन नागदेव द्वारा लाईगई बबूल या बेरीकी दो दातूनें सर्वज्ञको समर्पितकी जातीं। उनमें से एक को लेकर स्वामी दन्तधावन जब तक करते तब तक दूसरी को अपनी जंघा पर रख देते। दांत साफ करने के पश्चात् जंघा पर रखी दूसरी दातून लेकर स्वामी अपने नाखूनों से उसे दो भागों में कर देते और उस एक भाग को धनुष आकृति की तरह टेढाकर उससे जिह्वा साफ करते। दोनों भागों से जिह्वा साफ करने के पश्चात् नागुबाई द्वारा लाये गये जल से स्वामी अपने कर मुख प्रक्षालन करते।

मुख चरण प्रक्षालन के पश्चात् स्वामी बिछे हुये आसन पर विराजमान होते। स्वयं अपना कार्यक्रम कर नागुबाई स्वामी के सम्मुख की भूमि को साफ कर उस पर कमल के दो फूल अंकित करती। स्वामी को तिलक प्रदान करने के लिए गोपी चन्दन मिश्रित कस्तूरी को घिसकर तिलक तैयार करती और स्वामी के मस्तक पर उसका अर्ध चन्द्राकृति टीका लगाती। यदि किसी समय कोई सामर्थ्य सम्पन्न विद्यावंत पुरूष स्वामी के दर्शनार्थ आते तो स्वामी अपनी दोनो अंगुलियों से उसके मस्तक पर उसी चन्दन से दो लम्बी रेखाओं वाला तिलक लगा देते। प्रथम दिन नागदेव द्वारा लाये गये सुन्दर पुष्पों के अलंकारों से स्वामी का पूजन किया जाता, गले में पुष्पमाल, सिर पर मुकुटमाल, कानों में मकराकृति फूलों के झुमके, भुजाओं में गजरे, बाहों में बाहू भूषण तता हाथों में फूलों से बना गुलदस्ता। इस प्रकार के विविध पुष्पालंकार स्वामी को समर्पित किये जाते। खुले पुष्पों से स्वामी के सिर पर पुष्प वर्षा की जाती। ऐसे स्वामी का पुष्पालंकारों द्वारा पूजन होता।

पुष्पार्चन के पश्चात् अंगार पात्र पर रखे अंगारों पर सुगंधित धूप डाल स्वामी को समर्पित किया जाता। नागुबाई पांच आंरतीयें जला-जयतु मंगल, मंगला परम मंगल रूपा आदि स्तुति परक शब्दों का उच्चारण कर सर्वज्ञ की आरती उतारतीं। आरती उतारते समय भावातिरेक के कारण नागुबाई आठों ही अवस्था में होकर आनन्द मग्न हो जातीं थीं। वे आठ अवस्थायें थीं -- निश्चलता, शरीर पसीने से तर हो

जाना, भावातिरेकसे गला रूंध जाना, शरीर पर रोंगटे खडे हो जाना, संपूर्ण शरीर में कपकपी हो जाना, शरीर का वर्ण परिवर्तित हो जाना, आंखों से अश्रुधारायें बह उठना और ऊँचे स्वर से स्तुति परक शब्दों का उच्चारण करना ये आठों ही अवस्थाओं में बह जाती हुई नागुबाई के हाथों से गिरती हुई आरती को देख स्वामी नागदेव से कहते – वानरेश ! नागुबाई के हाथ की आरती थाम लो अन्यथा वह गिर जायेगी। तब नागदेव नागुबाई के हाथ से आरती लेकर नीचे रख देते। उसी भावावेश में नागुबाई दोनों हाथ परस्पर जोडकर स्वामी को नमस्कार करतीं। नागदेव स्वामी के सम्मुख पांच नमस्कार डालते तो नागुबाई बीस–तीस बार नमस्कार डाल प्रणाम करती। उसी अवस्था में नागुबाई सर्वज्ञ को सुपारी प्रदान करती। उसी समय नागदेवाचार्य द्वारा किये गये स्तुतिपरक श्लोकों को सुन स्वामी उसमें आई अशुद्धियां प्रकट करते हुए कहते–नागदेव ! यहां कोई सामवेद का ज्ञाता नहीं है, अन्यथा कैसे होता ? नागदेव कहते – भगवन् ! यहां नायेंबास ज्योतिष विद्या के ज्ञाता हैं ही। इस प्रकार पुष्पों से सुपूजित आसन पर विराजमान स्वामी श्रीचक्रधर उपस्थित भक्तजनों को अपनी अमृतमयी वाणी से ब्रह्म विद्या शास्त्र गहन सिद्धान्तों का सुमधुर उपदेश करते।

प्रात:कालीन पूजावसर समाप्त

मध्यान्ह कालीन पूजावसर प्रारंभ

इस प्रकार प्रात:कालीन विधि की समाप्ति के पश्चात् स्वामी की इच्छा को जान नागदेव आंगन में खडे स्वामी के श्रीचरणों में पादुकायें लाकर डालते और दिये गये कुरते को स्वामी अपनी लम्बी दोनों भुजाओं से एक साथ ही डालकर पहनते, सिर पर टोपी तथा गले में दुपट्टा लटका भर लेते, सर्दियों में उसे शरीर पर ओढ लेते और बरसात के दिनों में उसी दुपट्टे को तानकर भक्तजनों द्वारा बरसात से बचने के लिए स्वामी पर चँदवा करने के काम में लाया जाता।

स्वामी के भोजन के लिए जुटाकर लाई गई सामग्री में से नागुबाई आटा गूंथती, चावल भिगोती, अग्नि रक्षार्थ आग में उपले दबा देती। पानी लाने जाना होता तो नागुबाई किवाडों में सांकल लगाती या कसी को रखवाली के लिए बिठा स्वयं जाती।

स्वामी जब भ्रमणार्थ बाहर जाने प्रवृत्त होते तो पूर्व पश्चिम दिशाओं की ओर देख भक्तजनों से पूछते आज भ्रमणार्थ किस ओर जाना चाहिए अपनी अपनी इच्छानुसार कोई किस ओर कोई किस ओर तो जाने का सुझाव देता किन्तु सर्वज्ञ की मनोभावना को जानने वाले नागदेव के कहने पर स्वामी उधर ही चल देते। कभी कभी नागदेव पहले दिन नियत किये स्थान को देख आते तो भगवान् श्रीचक्रधर उधर ही चल देते। कभी यमलार्जुन नामक स्थान

की ओर तो कभी छिन्न स्थली की ओर तो कभी ऊंचे स्थान की ओर तो कभी रेतीले स्थान की ओर, ऐसा स्वामी का भ्रमणार्थ जाने का क्रम रहता। उन स्थानों पर पहुंचने पर नागुबाई स्वामी के बैठने के लिये आसन बिछाती। स्वामी के विराजमान होने पर चरण संवाहन किया जाता। यदि स्वामी की उपदेश करने की इच्छा होती तो वे उपदेश करते; नहीं तो भक्तजनों में परस्पर होड लगाकर दौडाना, गंगा में तैरने की प्रेरणा करना, प्रतिस्पर्धा कराके युद्ध कराना, ऊंची नीची भूमि को समतल कराना आदि विभिन्न कार्य कराकर भक्तजनों के विभिन्न पाप कर्मों का नाश करते। ऐसा कार्य कराते काफी समय हो जाता। धूप की तीव्र किरणों से स्वामी के मस्तक पर पसीने की बूंदें उभर आतीं जो मोतियों सदृश चमकती हुई प्रतीत होतीं। अन्त में स्वामी द्वारा सुपारी का सभी को प्रसाद दिया जाता। मन्दिर में रखे पदार्थों की रक्षार्थ व्यक्ति का प्रसाद नागुबाई लेकर अपने पल्लू में बांध देती। भोजन को देर हुई जान नागुबाई कहती–भगवन्! भोजन के लिए विलंब हो रहा है अत: मन्दिर में चले चलिए न! इच्छा न होने पर स्वामी कोई उत्तर न दे चुप ही रहते और यदि भोजन की इच्छा होती तो तत्काल जाने के लिए प्रवृत्त हो जाते।

नागुबाई आगे जाकर मन्दिर साफ कर आसन बिछाती। पीछे पीछे स्वामी नागदेव के कन्धे दर हाथ रख चले आते। बाहर बिछे आसन पर खडे हो स्वामी टोपी

कुर्ता उतार नागदेव को सुखाने के लिए दे देते। आसन पर बैठ गीले अंगोछे से बदन साफ करते। तभी नागुबाई द्वारा तैयार कर लाया गया भोजन चावल, कढी, सब्जी स्वीकारते। कभी पुरण पोली (मीठी रोटी) मांडा कुलचे (डेढ) पूरी (दो) ऐसा भोजन करते।

नागुबाई चपाती के किनारे निकाल उस पर घी परोसती। अन्त में स्वामी लस्सी के साथ चावल खाते। यह उस समय के धनिकों के समान स्वामी के भोजन का कार्यक्रम होता। भोजनोपरान्त कुल्ला आदि करने के पश्चात् नागदेवाचार्य स्वामी को पोतास नामक कपूर से युक्त पान प्रदान करते। नागदेवाचार्य के साथ स्वामी सौ कदम चहल कदमी कर नागुबाई द्वारा बिछाये गये आसन पर कुछ देर विश्राम करते।

स्वामी के विश्राम काल में नागुबाई मांगकर लाये गये सभी भिक्षान्न एकत्रित कर उसके छोटे २ लड्डू बना उस पर प्रसाद रखकर देती, सभी भक्तजन साथ साथ भोजन करते। भोजनोपरान्त थोडी देर सभी विश्राम करते।

विश्राम के बाद स्वामी भक्तजनों में कौन क्या कर रहा है, देखने ऊंच मठ की ओर जाते। वहां उन्हें परस्पर उधर उधर की बातें करते देख स्वामी चुपचाप वहीं से लौटकर नागुबाई से कहते– बाई ! सभी जन व्यर्थ के वार्तालाप में अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। आप यह सब कैसे कह रहे हैं ? नागुबाई के पूछने पर सर्वज्ञ कहते – बाई ! हम वहां

जाकर देख आये हैं।

कुछ देर बाद नागदेवाचार्य स्वामी को उधर न आया जान स्वयं वहां आकर नागुबाई से पूछते – माता ! आज स्वामी ऊंच मठ की ओर क्योंकर नहीं आये ? उत्तर में नागुबाई कहती अरे नागदेव ! स्वामी कहते थे तुम सब वहाँ बैठ इधर उधर की गप्पें हांक रहे थे ? स्वामी यह कैसे कह रहे हैं ? नागदेव के पूछने पर नागुबाई बोली – अरे नागदेव ! स्वामी तुम सबको वहाँ व्यर्थ का वार्तालाप करते देख आये हैं।

नागदेव प्रभृति सभी के चुपचाप स्वामी के पास आने पर स्वामी व्यंग भरे शब्दों से कहते – अरे ! आप लोग वहाँ धर्म सम्बन्धी वार्तालाप कर रहे थे न ? स्वामी के व्यंग भरे वचन सुन सभी सिर भुकाये सकुचाते हुए भूमि पर लकीरें कुरेदने लगते तो स्वामी समझाते हुए कहते – अरे पगलों ! ऐसे निरर्थक जीवन से मृत्यु भली। तुम से तो यह पशु अच्छा; क्योंकि वे जो खाते हैं उसी की बैठकर जुगाली करते हैं। तुम्हें सदैव यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि हमसे पृथक होने पर हमारी बताई हुई धर्म चर्चा में ही तुम्हारा समय व्यतीत हो ; क्योंकि अन्य वार्ता की अपेक्षा निद्रा लेना अच्छा है। इधर उधर की गपशप से मन डाँवाँडोल हो जाता है। अतः नींद लेना उचित है, इधर उधर की गप्पें हाँकना उचित नहीं। जिस वार्तालाप में सुख, कल्याण तथा सुन्दरता नहीं उसका करना न करना कोई महत्व नहीं रखता। वह तो

अरण्य में रोने के समान है। इस प्रकार स्वामी के उपदेश पर भक्तजन एकान्त में जाने पर धर्म सम्बन्धी चर्चायें ही किया करते।

कभी २ उन्हें अत्यधिक धर्म चर्चा में लीन होते देखते तो स्वामी उन्हें समझाते – अरे पगलो ! हमारे आने का भी तुम्हें आभास नहीं रहा। यह धर्म चर्चा तुम्हें विषयत्व की तरह लग गई। ऐसा भी होना उचित नहीं। सभी प्रकार का ध्यान होना चाहिए। एक बार नागदेवाचार्य के यह पूछने पर भगवन् ! यह शास्त्र बार बार याद करने पर भी क्यों विस्मृत हो जाता है ? स्वामी ने उत्तर में कहा – नागदेव ! यह कपूर विद्या है। कठिन है। सरलता से इसे ग्रहण नहीं किया जा सकता। पूरा जीवन इसके लिए समर्पित करना पडता है।

किसी दिन स्वामी भक्तजनों को देखने जाते तो नागदेव वहां स्वामी के लिए आसन रचते। स्वामी के आसन पर विराजने पर भक्तजन पूछते – भगवन्! हमने आपके द्वारा निरूपित धर्म चर्चा का ऐसा अर्थ समझा है किन्तु नागदेव दूसरे ही अर्थ का प्रतिपादन कर रहा है अत: दोनों में कौन सा अर्थ ठीक है ? उत्तर में स्वामी कहते – आप लोगों द्वारा समझा अर्थ ठीक नहीं, नागदेव का प्रतिपादित अर्थ सही है। जब कभी दोनों के अर्थ ठीक न होते तो स्वामी समझाते कि तुम दोनों द्वारा समझे गये अर्थ ठीक नहीं हैं। यह अर्थ इस प्रकार से है। ऐसा बताकर सर्वज्ञ पूछते – अब यह अर्थ आप लोगों की समझ में आ गया है ना। भक्तजनों की

स्वीकृति पर स्वामी पुनः उनसे वह अर्थ पूछते - किन्तु कुछ न कुछ गलती रह ही जाती। स्वामी उसे ठीक कर कहते - अरे ! ठीक अर्थ समझने का तुम लोगों को आभास मात्र हो गया था वस्तुतः ऐसा नहीं है। स्वामी एक ही वचन का तीन बार अर्थ समझाकर पुनः परीक्षार्थ पूछा करते। ऐसा कराते काफी समय व्यतीत हो जाता। भिक्षा का समय हुआ जान स्वामी कहते अब बस करो। भिक्षा का समय हो गया है।

सभी भिक्षा मांगने जाने लगते तो स्वामी प्रत्येक को अलग-अलग गांव भिक्षार्थ बांट देते और एक दूसरे का साथ भी बदल देते। सभी द्वारा मांगकर लाई गई भिक्षा की झोलियां स्वामी को दिखाई जातीं। झोली रख सभी कुछ समय तक सर्वज्ञ की श्रीमूर्ति का ध्यान करते; पश्चात् भोजनादि विधि का कार्यक्रम सम्पन्न होता।

मध्याह्न कालीन पूजावसर समाप्त

सायंकालीन पूजावसर प्रारम्भ

इस प्रकार भिक्षा मांगकर लाने के पश्चात् नागदेव झोली वहां रख सर्वज्ञ को नमस्कार कर पूजा की सामग्री लाने लिए स्वयं बाजार जाते। लाई हुई पूजा सामग्री नागुबाई को स्वयं आचार्य फूलों के अलंकार बनाने तत्पर हो जाते। भोजनता नामक स्थान पर स्वामी के चलने पर वहां उनके लिए आसन बिछाया जाता। चरण प्रक्षालनादि क्रिया के बाद नागुबाईसा द्वारा चुनचुनकर दिए गये भिक्षान्न का स्वामी भोजन करते। पश्चात् सभी भोजन करते।

तब तक सायंकाल का समय होने लगता। सबसे पहले नागुबाई मन्दिर में पहुँचती। झाडपोंछ कर स्थान साफ करती। आंगन में गोबर पानी मिलाकर छिडकाव करती। विविध रंगों से फूलपत्तियां बनाती। चबूतरे पर आसन बिछाती जहाँ आकर स्वामी विराजमान होते।

स्वामी की आठ दिनों के बाद हजामत बनवाई जाती और सर्वज्ञ को चार दिनों के बाद तैलमर्दनादि क्रिया के साथ स्नान कराया जाता। सर्वज्ञ की स्नानादि क्रिया के बाद वे धोती बांध आसन पर विराजमान होते। मध्यान्ह कालीन पूजावसर कीतरह स्वामी के तिलक लगा पुष्पादि अलंकारों से पूजन होता। भोजनादि के कार्यक्रम में दूध में सेवियां परोसी जातीं। भोजनोपरान्त नागदेवाचार्य पोतास कपूर मिश्रित पान सर्वज्ञ को समर्पित करते और आये हुये

दर्शनार्थियों को भी पान समर्पित किये जाते। सर्वज्ञ के लिए चबूतरे पर आसन बिछाया जाता। नागदेवाचार्य प्रभृति सभी के भोजनोपरान्त सर्वज्ञ ब्रह्मविद्या शास्त्र का उपदेश आरम्भ करते।

कभी २ सर्वज्ञ के उपदेश करते समय नागदेवाचार्य ऊंघने लगते तो सर्वज्ञ उनके मुख पर पानी के छीटे देकर उन्हें जगाते। दीपक का तेल समाप्त होते देख घी दीपक में डाल उपदेश शुरू रखते। एक दिन सर्वज्ञ उपदेश दे रहे थे और नागदेवाचार्य ऊंघ रहे थे। तभी बाहर से आई नागुबाई ने पूछा – भगवन्! आप किसके प्रति उपदेश कर रहे हैं, नागदेव तो बैठा ऊंघ रहा है। उत्तर में सर्वज्ञ कहते बाई! हमें उपदेश करने की प्रवृत्ति होने पर हम एक खम्बे को भी निमित्त करके उपदेश कर देते हैं; कहकर सर्वज्ञ ने हाथ के इशारे से खम्बे का आकार जता दिया।

एक दिन सर्वज्ञ ब्रह्मविद्या शास्त्र का उपदेश कर रहे थे। कार्यवश नागुबाई बाहर गई हुई थी। उसने आकर कहा – भगवन्! इससे पूर्व का उपदेश सुनने से मैं वंचित रह गई हूं। कृपया फिर से वह उपदेश सुना दीजिए न। सर्वज्ञ ने कहा – बाई! नागदेव से पूछ लो। नागुबाई के पूछने पर नागदेवाचार्य ने सुनाना आरम्भ किया तो नागुबाई ने पूछा – प्रभो! क्या नागदेव वही कह रहा है जो आपने कहा था? उत्तर में सर्वज्ञ ने नागदेव की प्रशंसा में कहा – बाई! यह नागदेव अपने पाससे कुछ नहीं कह पायेगा। जो कुछ हम

निरूपित कर चुके हैं वही कहेगा, अन्य नहीं।

एक दिन सर्वज्ञ उपदेश कर रहे थे। उपदेश करने में वे इतने तल्लीन हो गये थे कि सारी रात बीत गई। प्रात: काल होने लगा तो नागदेवाचार्य ने आश्चर्य चकित हो कहा - भगवन्! प्रात:काल होने जा रहा है। उत्तर में सर्वज्ञ बोले - नागदेव! तुम्हारे लिए प्रात:काल का होना ही अधिक जान पडता है। अरे! सिद्ध पुरूष के दर्शनार्थ आये राजा के लिए तो वह युग ही चला गया था, कहकर सर्वज्ञ ने वह कथानक सुनाना आरंभ किया-एक बार एक राजा एक सिद्ध पुरूष की प्रसिद्धि सुन उसके दर्शनार्थ उसकी गुफा में चला गया। उसने अपना परिवार तथा सेना, हाथी, घोडे, बाहर ही खडे कर दिये स्वयं गुफा में प्रवेश कर उसने क्या देखा कि योगी आंखें मूंद ध्यान मग्न मुद्रा में बैठा है। अत: इसकी समाधि भंग हो जाने पर पत्र पुष्प तथा दर्शनार्थ लाई भेंट सामग्री समर्पित कर नमस्कार कर चला जाऊंगा। यह सोच राजा उसी स्थान पर बैठ गया। प्रतीक्षा में बैठे बैठे कितना समय व्यतीत हो गया इसका राजा को जरा भी भान नहीं था। राजा उसकी समाधि भंग की प्रतीक्षा करता रहा। अन्त में योगी ने आंखें खोलीं, लाई हुई पूजा सामग्री पत्र पुष्प समर्पित कर राजा ने प्रणाम किया। बाहर अपने परिवार से मिलने जाने की इच्छा से जब राजा उठा तो योगी ने पूछा - राजन्! कहां जा रहे हो ? राजाने कहा बाहर मेरा पाईक परिवार खडा है। प्रत्युत्तर में योगी ने कहा - राजन्! वह तो युग ही चला

गया, यह दूसरा युग है। अब आप अपने परिवार को कहां पाओगे ? इस कथानक के सुनने के बाद नागुबाईसा ने कहा -- भगवन् ! मुझे तो यही पता चलता है कि वह योगी पुरूष और कोई नहीं आप ही रहे होंगे। किन्तु सर्वज्ञ ने उसकी उस बात का कोई उत्तर न दिया।

सायंकालीन पूजावसर समाप्त

मुकुन्द प्रकाशन की जीवनोपयोगी धार्मिक पुस्तकें

अ.नं.	नाम	मुल्य
१.	जयकृष्णी-पंथ	५०=००
२.	अनन्य भक्ति	५=००
३.	अनादि चार पदार्थ	५=००
४.	प्रमुख आचार्य व संत	१५=००
५.	श्री दत्तात्रेय व श्री चक्रपाणी चरित्र	१०=००
६.	श्रीकृष्ण चरित्र	१०=००
७.	प्रकरणवश	२८=००
८.	ब्रह्म विद्या शास्त्र का विवेचन	५=००
९.	स्मृति स्थल	८=००
१०.	रुक्मिणी स्वयंवर	३०=००
११.	श्री कृष्ण बाल लीला	७=००
१२.	शुकदेव चरित्र	१५=००
१३.	मूर्तिज्ञान	१०=००
१४.	श्री गोविन्द प्रभु चरित्र	२५=००
१५.	सार्थ सूत्रपाठ	१५=००
१६.	विचार-विचार मालिका	१५=००
१७.	दृष्टांत पाठ	१०=००
१८.	लेख संग्रह भाग १	३५=००
१९.	लेख संग्रह भाग २	४०=००
२०.	सचित्र श्री चक्रधर चरित्रांक	५=००
२१.	श्री दत्तात्रेय चरित्र चित्रकथा	५=२५
२२.	श्री चक्रपाणी चरित्रांक	५=२५
२३.	आचार-आचार मालिका	७=००
२४.	द्रौपदी स्वयंवर	६=००
२५.	उद्धव गीता	१०=००
२६.	लक्षण स्थल	२५=००
२७.	तीनों पूजावसर	५=००
२८.	स्तोत्र समुच्चय	धर्मार्थं
२९.	हिन्दी संकष्ट वज्र पंजरू	धर्मार्थं
३०.	सुदामा चरित्र	धर्मार्थं
३१.	चिंतन-संग्रह	धर्मार्थं